साहित्य सिनेमा सेतु
रील से रियल लाइफ तक
ISSN: 2584-0819

ग़ज़ल : यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले

-मुहम्मद आसिफ़ अली
स्वतन्त्र लेखन, न्यूज़ पेपरों एवं मैग्जीन्स में कविता, लघुकथा, कहानियां, आलेख ,साहित्य एवं सिनेमा में गहरी रुचि
https://sahityacinemasetu.com/ghazal-yaha-ki-hawaon-mein-zahar-gholne-wale/

यहाँ की हवाओं में ज़हर घोलने वाले।
तू गूंगा क्यों हो रहा है सब बोलने वाले॥

तेरे आँसू किसी के गम में क्यों निकलते नहीं।
तू क्यों रोता है सियासत के पर खोलने वाले॥

चैन की ज़िन्दगी थी एक, उसको भी छीन लिया।
इन्साफ के तराज़ू में नफरत को तोलने वाले॥

जहाँ भी जाएगा तू परेशान ही रहेगा आखिर।
चादर इंसान की सुन ले ओढ़ने वाले॥

एक दिन तेरा भी हिसाब होगा ज़िंदगी का।
मज़लूमों के घरों को बे-हिसाब तोड़ने वाले॥

अवाम के हाथों नीस्त-ओ-नाबूद हो जाएगा तू भी।
ताकत से अपनी लोगों के सर फोड़ने वाले॥

इस सब के बावजूद भी हम चिराग़ जलाएँगें।
हमें कहते हैं सब 'आसिफ' दिल जोड़ने वाले।।